जीना-जिलाना मत भूलना

पाठ-5

सवेरे उगकर सूरज कहता
रोशनी फैलाना मत भूलना,
चमक-चमक कर चाँद कहता
चाँदनी बिखेरना मत भूलना।

हरियाली फैलाकर पेड़ कहते
छाँव देना मत भूलना,
चहक-चहक कर पक्षी कहते
मीठे गाना मत भूलना।

खिल-खिल कर फूल कहते
प्यार बाँटना मत भूलना,
हिल-मिल कर भौंरे कहते
गले लगाना मत भूलना।

बढ़ती-बढ़ती नदियाँ कहतीं
बढ़ते रहना मत भूलना,
बहती-बहती हवाएँ कहतीं
जिंदगी देना मत भूलना।

कहती प्रकृति, आए विपत्ति
हँसना-हँसाना मत भूलना,
चलें गोलियाँ, फटें गोले
जीना-जिलाना मत भूलना।

- डॉ. अच्युत शर्मा

DAILY ASSAM

DAILY ASSAM

आओ, जानें:

'जीना-जिलाना मत भूलना' नामक इस कविता के जरिए कवि ने यही कहना चाहा है कि प्रकृति के विविध उपकरण हम मनुष्यों को अपने कर्तव्य की याद दिलाते हैं। सूर्य हमें ज्ञान और आशा की रोशनी फैलाने के लिए कहता है, तो चाँद सेवा और परोपकार की चाँदनी बिखराने की बात करता है। हरे-भरे पेड़ हमें दूसरों को आराम की छाया प्रदान करने का संदेश देते हैं, तो चिड़ियाँ मीठी-मीठी बातें करने का उपदेश देती हैं। फूल हमें आपस में प्यार बाँटने की बात बताते हैं, तो भौंरे सबको गले लगाने को कहते हैं। बढ़ती हुई नदियाँ हमें जीवन में निरंतर आगे बढ़ने को कहती हैं, तो बहती हुई हवाएँ दूसरों को जीवन देने की बात करती हैं। प्रकृति हमें यही संदेश देती है कि जीवन में भले ही आपदाएँ आएँ, हम स्वयं हँसना और दूसरों को हँसाना न भूलें। प्रकृति हमसे कहती है कि जीवन में कैसा भी संकट आए, हम स्वयं भी जीएँ और दूसरों को भी जीने में मदद पहुँचाएँ।

अभ्यास-माला

पाठ से

1. आओ, 'जीना-जिलाना मत भूलना' शीर्षक कविता का हाव-भाव के साथ वाचन करें।

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) तरह-तरह के पक्षी हमसे क्या कहते हैं ?

(ख) रंग-बिरंगे फूल हमें क्या बताते हैं ?

(ग) हमारे लिए भौंरों का संदेश क्या है ?

(घ) बढ़ती हुई नदियाँ हमें कौन-सा उपदेश देती हैं ?

(ङ) 'जीना-जिलाना मत भूलना' नामक कविता के कवि कौन हैं ?

3. सोचो और संक्षेप में उत्तर दो :

(क) सवेरे पूर्व दिशा में उदित होकर सूर्य हमें क्या करने के लिए कहता है ?

(ख) रात को आकाश में चमक-चमक कर चाँद हमें किस कर्तव्य की याद दिलाता है ?

(ग) हरे-भरे पेड़-पौधे हमें क्या संदेश देते हैं ?

(घ) बहती हुई हवाएँ हमें क्या करने को कहती हैं ?

4. निम्नलिखित पंक्तियों का सरल अर्थ लिखो :

कहती प्रकृति आए विपत्ति
हँसना-हँसाना मत भूलना,
चलें गोलियाँ, फटें गोले
जीना-जिलाना मत भूलना।

5. **'जीना-जिलाना मत भूलना' कविता का मूल भाव स्पष्ट करो।**

पाठ के आस-पास

1. 'प्रकृति एक खुली पुस्तक है' विषय पर कक्षा में चर्चा करो।
2. तुम्हारे आस-पास प्रकृति के जो भी उपकरण हैं, उन सबके नाम लिखो और उनको प्राणी तथा अप्राणी के हिसाब से दो वर्गों में बाँटो।
3. तितली और जुगनूँ हमें किन कर्तव्यों की याद दिलाते हैं, उसे वर्णित करते हुए एक कविता लिखो।
4. तुमने प्राकृतिक और मानव द्वारा सर्जित आपदाएँ जरूर देखी होंगी। ऐसी किसी आपदा के समय तुम्हें प्राप्त हुए अनुभवों को लिख डालो।
5. तुमलोग चार-पाँच के समूहों में बँट जाओ तथा 'जीओ और जिलाओ' विषय पर बारी-बारी से अपने विचार प्रकट करो।

भाषा-अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :**

   सवेरा सूरज चाँद पेड़ पक्षी फूल भौंरा नदी हवा

2. **वाक्य में प्रयोग करो :**

   चमक-चमक कर, चहक-चहक कर, खिल-खिल कर, हिल-मिल कर

3. **आओ, निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दें :**

क - वर्ग	**ख - वर्ग**
हमलोग जीते हैं।	हमलोग जिलाते हैं।
मोहन पढ़ता है।	मोहन पढ़ाता है।
वह हँसती है।	वह हँसाती है।
वह रोता है।	वह रुलाता है।

यहाँ क - वर्ग की रेखांकित क्रियाओं से स्वयं कुछ करने का बोध हो रहा है, जबकि ख - वर्ग की रेखांकित क्रियाओं से दूसरों को कुछ करने हेतु प्रेरित करने का भाव प्रकट हो रहा है। प्रेरणा देने का बोध कराने वाली ऐसी क्रियाओं को **प्रेरणार्थक क्रिया** कहते हैं। देखना, सीखना, लिखना, भागना, नाचना - इन क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप हैं क्रमशः **दिखाना, सिखाना, लिखाना, भगाना** और **नचाना**। इनका प्रयोग करके एक-एक वाक्य बनाओ और शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

DAILY ASSAM

4. तुम लोगों ने 'जीना-जिलाना मत भूलना' कविता को पढ़ते समय स्थान-स्थान पर 'भूलना' क्रिया-रूप के प्रयोग पर जरूर ध्यान दिया होगा- 'रोशनी फैलाना मत भूलना', 'छाँव देना मत भूलना', 'हँसना-हँसाना मत भूलना' आदि। यहाँ परोक्ष रूप से अनुज्ञा (आज्ञा, अनुरोध आदि) का बोध हो रहा है। और कुछ वाक्य लेते हैं -

सदा सच **बोलना**।	कभी झूठ मत **बोलना**।
सुबह व्यायाम **करना**।	किसी को दु:ख मत **देना**।

यहाँ 'बोलना' 'करना' और 'देना' क्रियाओं से अनुज्ञा का भाव प्रकट हो रहा है। इन्हें **क्रिया का अनुज्ञा रूप** कहते हैं।

क्रिया के अनुज्ञा रूप और हैं। आओ, कुछ और वाक्य लेते हैं :

तू बाजार **जा**।	तू खाना **खा**।
तुम बाजार **जाओ**।	तुम खाना **खाओ**।
आप बाजार **जाइए**।	आप खाना **खाइए**।

यहाँ जा - जाओ - जाइए और **खा - खाओ - खाइए** - इन क्रिया-रूपों के जरिए प्रत्यक्ष रूप से अनुज्ञा का भाव व्यक्त हो रहा है। अब तुमलोग ऐसे ही 'आना', 'गाना', 'पढ़ना', 'लिखना' और 'बैठना' क्रियाओं के अनुज्ञा रूप बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो तथा अपने शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

5. **आओ, निम्नांकित वाक्यों को ध्यान से पढ़ें और समझें :**

सवेरे उगकर सूरज कहता है। खिल-खिल कर फूल कहते हैं। बढ़ती हुई नदियाँ कहती हैं।

इन वाक्यों के रेखांकित क्रिया-पदों से वर्तमान समय में नियमित रूप से किसी काम के होने का भाव प्रकट हो रहा है। और कुछ वाक्य लेते हैं :

लड़का स्कूल जाता है।	लड़की स्कूल जाती है।
लड़का स्कूल जा रहा है।	लड़की स्कूल जा रही है।
लड़का स्कूल जाता होगा।	लड़की स्कूल जाती होगी।

उपरोक्त वाक्यों के रेखांकित क्रिया-पदों से वर्तमान समय में कुछ होने का बोध हो रहा है। अतः ये वर्तमान काल के क्रिया-पद हैं। वर्तमान काल क्रिया-व्यापार की निरंतरता को सूचित करता है। इसके तीन भेद हैं- सामान्य वर्तमान काल, तात्कालिक वर्तमान काल और संदिग्ध वर्तमान काल।

DAILY ASSAM

पूर्वोक्त वाक्यों में **'जाता है'** और **'जाती है'** क्रिया-पदों से वर्तमान समय में नियमित रूप से कार्यों के घटित होने का बोध हो रहा है। अत: ये **सामान्य वर्तमान काल के क्रिया-पद हैं।** **'जा रहा है'** और **'जा रही है'** क्रिया-पदों से वर्तमान समय में क्रिया-व्यापारों के जारी रहने का भाव स्पष्ट है। ये **तात्कालिक वर्तमान काल के क्रिया-पद** हैं। **'जाता होगा'** और **'जाती होगी'** से वर्तमान समय में क्रिया-व्यापार के घटित होने में संदेह का भाव व्यक्त हो रहा है। अत: ये **संदिग्ध वर्तमान काल के क्रिया-पद** हैं।

अब तुम लोग वर्तमान काल के इन तीनों भेदों के तीन-तीन वाक्य बनाकर शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

योग्यता-विस्तार

1. हँसी का जीवन में बड़ा महत्व है। यह 'टॉनिक' का काम करती है। इसलिए आजकल जगह-जगह 'लाफिंग क्लब' खोले जा रहे हैं। अगर तुम्हारे इलाके में ऐसा 'क्लब' नहीं है, तो अपने मित्रों के सहयोग से इसे खोलने का प्रयास करो।
2. फ्लोरेंस नाइटिंगल और मदर टेरेसा विश्व की ऐसी दो महीयसी नारियाँ हैं, जिन्होंने घायल, दु:खी एवं पीड़ित जनों को जिलाया था अर्थात उन्हें जीने में बड़ी मदद पहुँचायी थीं। उन दोनों के बारे में जानकारी प्राप्त करो। आवश्यकता हो तो अपने शिक्षक/शिक्षिका की सहायता लो।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
जिलाना	=	दूसरे को जीने की प्रेरणा देना, जीने में मदद पहुँचाना	विपत्ति	=	आपदा, बाधा, परेशानी
			गोले	=	बम आदि गोलाकार मारणास्त्र
उगकर	=	उदित होकर	उपकरण	=	उपादान
सूरज	=	सूर्य	निरंतर	=	लगातार, अविराम
रोशनी	=	प्रकाश, उजियाला	संकट	=	आपदा, विपत्ति
छाँव	=	छाया	चलें गोलियाँ, फटें गोले	=	मनुष्य द्वारा सर्जित आपदाओं का आना
बढ़ती-बढ़ती	=	आगे बढ़ती हुई			
बहती-बहती	=	बहती हुई			

DAILY ASSAM